स्थानीय ही है - हमारा भविष्य

हमारी पीड़ियो को कोई भविष्य चाहिये तो वह स्थानीय ही होगा

नीचे दिया गए अंश हेलेना नोर्बेर्ग होज द्वारा जुलाई 2019 में प्रकाशित नईं पुस्तक: स्थानीय ही हे - हमारा भविष्य: प्रसन्नता के अर्थशास्त्र की सिड़ी, के पहले अध्याय से लिया गया है|

हिन्दी अनुवादक: दीपक शर्मा, डाइरेक्टर, एक्वालिटी एम्पोवेरमेंट फ़ाउंडेशन, भारत

सुखद समाचार यह हे की इस प्रकार के भविष्य का मार्ग पहले से ही प्रशस्त हो चुका है| सदियों से चली आ-रही उस आर्थिक विचारधारा, जिसमे "बड़ा हे तो अच्छा है" जैसी अवधारणाओं का बोलबाला रहा है, के मुख्यधारा के मीडिया पटल को, कहीं दूर, मानवीय और पर्यावरणीय उत्थान केन्द्रित, सहज, स्त्रैण, सहभागी द्रष्टिकोण द्वारा चुनौति दी जारही है| अब लोग उस संबंध को स्वीकारने लगे हैं, प्रकृति के स्वयं के लिए और दूसरों के लिए भी यह मानव के आनंद का स्त्रोत है| और प्रतिदिन कोई नयी, प्रेरक पहल का प्रस्फुटन हो रहा है, जिसमे सच्ची प्रगति की अथाह संभावनाएं है|

साथ ही साथ एक जागरुकता बड़ती जा रही है, सामान्य वर्ग से लेकर शिक्षित वर्ग के लोगो मे, की सच्ची अर्थ-व्यवस्था तो प्राकृतिक संसार मे ही है, अपनी सभी जरूरतों के लिए हम उस पर निर्भर होते हैं| हम अपनी अर्थव्यवस्था मे यदि हम मूलभूत बदलाव अपनाते हैं, व बड़े-बड़े व्यापारिक निगमों द्वारा चलाये जा रहे वेश्विक बाज़ारों से प्रथक, विविधता भरे स्थानीय व्यवस्था अपनाते हैं तभी हम एक ऐसा जीवन जी सकते हैं जो ऊपर लिखित समझ को दर्शाता हो|

यह भविष्य कैसा दिखाई देता है? गूगल संस्थान के रे कुर्जवील बताते हैं कि भविष्य में दुर्भाग्य से हमारे राजनीतिक और व्यापारिक नेत्रत्वकर्ता, इसप्रकार की सभी वास्तविकताओं के प्रति अंधे बने हुवे हैं| वे हमे एक अलग मार्ग पर ही ले चले हैं, जहाँ पर जैव-तकनीकी से जगत का पोषण होगा, जहाँ वेश्विक सद्भाव का माध्यम इंटरनेट होगा, जहाँ लोगों की भोतिक और वैचारिक कठिनाइयाँ रोबोट दूर करेंगे| और इसमे सदा से अमीर समुदाय की दौलत का 1 प्रतिशत भी शायद ही किसीप्रकार छलक कर गरीबों का भला कर पायी है|

हमारा भोजन "पुर्णतः नियंत्रित गगनचुंबी इमारतों" से प्राप्त होंगे, जिसमे क्रत्रिम माँस सम्मिलित है| टेस्ला की इलोन मस्क के अनुसार मानवीय जीवन को अधिकतम स्तर तक पहुँचाने के लिये, मंगलग्रह पर एक शहर के निर्माण का विचार बहुत की आलोचनात्मक है| और तीस स्तरीय आवागमन धरती के घने शहरों को भीड़-भाड़ से मुक्ति प्रदान करेगी| गोल्डमैन साच बताते हैं की दिनोदिन अधिक से अधिक वस्तुओं को डिजिटल करने से "मशीन, मनुष्य, और इन्टरनेट के बीच एक नेटवर्क स्थापित करेगा| जिसके परिणाम स्वरूप एक नए पर्यावरणीय तंत्र का निर्माण होगा जिसमे जिसके अधिक उत्पादन, बेहतर उर्जा कार्यकुशलता और अधिक लाभकारिता प्राप्त होगी|

इस तरह के विचार, जो काल्पनिक एवं उत्साही प्रतीत होते हें, सरहनीय हे, परन्तु वे केवल प्रचलित तरीकों को ही बढावा देते हैं जैसे, नव-उपनिवेशवादी प्रसार, शहरीकरण और वस्तुवादीता, अति-आवेशित एवं विचित्र यंत्रो से लेस| और जो वे हमें नहीं बताते हैं वह यह की किस प्रकार यह तंत्र, सर्वाधिक संख्या मे उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन: मानव-उर्जा और मानव-श्रम को प्रत्येक स्तर पर कचरे का ढेर बनाता जा रहा है| इसी के साथ हमारे द्वारा दिया गया कर, पहले से ही सीमित प्राकृतिक संसाधनों और उर्जा के दुरूपयोग को बढानें मे लगाया जाता है| हमारे पास यहएक ऐसा तंत्र है जो बड़े स्तर पर बेरोजगारी, गरीबी, और प्रदुषण को एकसाथ उत्पन्न कर रहा है|

यह तंत्र हम मैसे अधिकांश की इच्छाओं का ध्योतक नहीं है, वरन इसमे बहुत ही सहजता व सक्रियता के साथ हमें कुछ भी कहने से वंचित कर दिया गया है| मेरे विचार मे, अच्छा-व्यक्ति या बुरा-व्यक्ति की कहानी भी इसका सही वर्णन नहीं है| वैसे जगत मे ऐसे लोगो की संख्या नगण्य ही है, जो सोच-समझ कर इस कारपोरेट-संस्कृति को आगे-ढकेलने का प्रयास कर रहे हैं, दुनियाभर में यही कोई दस-हजार व्यक्ति – परन्तु वे इस काल्पनिक अर्थव्यवस्था के आदर्श और उसके सूचकों से इतने मंत्र-मुग्ध हैं कि वे अपने निर्णयों के वास्तविक परिणामों के प्रति अंधे हो जाते हैं |

एक तरह से, इस तंत्र ने हम सभी को बांध दिया है| यहाँ तक की बड़े-बड़े औधोगिक संस्थानों और बेंको के मुख्यकार्यकारी-अधिकारी भी बाजारों के अनुमानों के प्रभाव में बढ़ोतरी के लक्ष्यों और अल्पअवधि लाभोंके की पूर्ति में लगे रहते हें| वे सदैव शेयरधारकों की संख्या में कमी और अपनी नौकरी जाने के डर, या शिखर पर बने रहने के दबाव में रहते हैं| अतः, हमें इस सम्पूर्ण तंत्र पर ही विचार कर इसको बदलने का प्रयास करना होगा – ना की इन बदलते हुवे लोग को बदलना जो इसको ताकत प्रदान करते हें|

जैसा की मैने पहले ही कहा है, यही एकमात्र दिशा नहीं हे जिस और विश्व-समुदाय को ले जाया गया है| समुदाय और प्रकृती के बीच का वह गहन संबंध, अधिकांश समय तक हम जिसके साथ विकसित हुए है, सम्पूर्ण जगत के लोग अब उस गहन संबंध को छह रहे हैं| और पुरजोर ताकत के साथ वे दिशा के इस आधारभूत बदलाव को आगे ढकेल रहे हैं| यह कुछ खरब-पतियों की उच्च-तकनीकी तिकड़मों और चालाकी के माध्यम से मुद्रा संचयन के जड़ विचारों के स्वपन से नहीं, वरन मानव होने के गहरे अनुभवों से उभरकर आया है|

प्रत्येक महाद्वीप में जमीनी-स्तर पर अलग-अलग संस्कृतियों का जनसमुदाय एकजुट होरहा है जिससे की पृथ्वी और उसके पर्यावरणतंत्र के साथ सामाजिक संबंधों का ताना-बाना फिर से बुना जा सके| वे तैयार कर रहे हैं एक सम्पन्न स्थानीय अर्थव्यवस्था और समाज जो हमें पीढी-दर-पीड़ी अधिक सार्थक व उत्पादक अवसर प्रदान कर सके| इसमें सम्मिलित है सामुदायिक बगिया से किसान-बाज़ार, वैकल्पिक शेक्षिक-स्थान से स्थानीय व्यापार संगठन, और सहकारिता| और इन सभी में जो एक समानता है वह है स्थानीय सम्बन्धों पर आधारित नवीनीकरण, जिसमे नैसर्गिक और स्वतः मानवीय प्यार और जुडाव की कामना की झलक है|

स्थानीयकारण के ये सभी कदम स्पष्टतः ये दर्शाते हैं की मानव-प्रकृति समस्या नहीं है, वरन यह यांत्रिक-अर्थव्यवस्था की एकमात्र संस्कृति है जिसने हमारी इच्छाओं और आवश्यकताओं को भ्रमित कर दिया है| यह विचार उस-समय और भी मजबूत हो जाता है, जब आप लोगों को देखते हैं फिर से उन मानवीय व्यवस्थाओं से जुड़ते हुवे| इस परिपेक्ष मे मैंने देखा है कैदियों को परिवर्तित होते, भ्रमित युवाशक्ति को लक्षित और सार्थक जीवन अपनाते, कुंठाओं को ठीक होते हुवे; सामाजिक, वंशानुगत व परंपरा से चली आरही खाईयों को पटते हुवे|

बहुत सी स्थितियों में, ये सभी शुरुआतें, सामान्य परिस्थितियों से उत्पन्न अधिक जन-पड़ती हैं ना की संसार को बदलने के विचार से उत्पन्न| परंतु ये सभी कदम मिलकर व्यापार-जगत के लिए, एक बहुत शक्तिशाली चुनौति प्रस्तुत करते हैं और भविष्य का एक अलग-थलग स्वप्न बुनते हैं|

यह उभरती हुई क्रांति वामपंथ और दक्षिणपंथ की दुविधा को प्रबल करती है| यह, विविध मानवीय मूल्यों और सपनों को उभारती/निखारती है और साथ ही साथ प्रकृति मे संस्कृति का समन्वय करती है| इसका मतलब है की दूसरी दुनिया की यांत्रिक-संस्कृति के अंतर्गत अत्यधिक आदानों के प्रयोग से और दूरस्थ निर्भरताओं से मिलने वाली मूलभूत आवश्यकताओं से, समुदाय अपने-आप को मुक्त होने के प्रयास करते हुवे स्थानीय कौशल के उत्पादन को अपना सकता है| यहाँ सच्ची अवश्यकता पर जोर देने का है, न की बाजार और विज्ञापन द्वारा रचित उपभोक्तावादी और बड़ोतरी की अंतहीन भट्टी मे झोकने का|

स्थानीयकरण का मतलब है, संभावनाओं और ऋणों के अनिश्चिता भरे और शोषक बुलबुलों से बाहर निकलकर वास्तविक अर्थव्यवस्था मे लोटना – यह हमारा संपर्क है प्राकृतिक संसार और अन्य लोगों के साथ| सुपर-मार्केट की तरह पहले बेहिसाब मात्रा मे गाजर खरीदना फिर उसमे से एक-समान छांट कर बाकी को फेकदेने के तरीके के स्थान पर स्थानीय बाज़ार मे उत्पादों की विविधता हो, इसमे हमे पर्यावरणीय और विविधतापूर्ण उत्पादन के लिए हमे अतिरिक्त सुविधा प्रदान करना चाहिए| इसका मतलब है, बहुत कम यंत्रो और कम रसायनों से अधिक खाध्य पदार्थ, भूमि पर अधिक हाथ मतलब की अधिक सार्थक रोजगार| इसका मतलब है कार्बन डाई ऑक्साइड के उत्सर्जन मे अत्यधिक कमी, प्लास्टिक से पेकेट बनाने की अवश्यकता नहीं, वनीय जैव-विविधता मे बड़ोतरी, स्थानीय समुदाय मे धन का अधिक लेन-देन, उत्पादक और उपभोक्ता के बीच अधिक जीवंत संपर्क एवं वार्तालाप और सच्ची स्वतन्त्रता पर आधारित अधिक सम्पन्न संस्कृति|

इसे ही मै, स्थानीयकरण का सामाजिक-गुणक प्रभाव कहती हूँ, और यह हमारी खाध्य-व्यवस्था से बहुत आगे की बात है| वेश्विक-एकल-संवर्धन-पद्धती (मोनोकल्चर) के अंधे, संपर्क-विहीन, और अति-विशेषीकृत व्यवस्था मे, आयातित लोहा, प्लास्टिक, और कोंक्रीट का प्रयोग करके मकान बनाते हुवे, जबकि स्थानीय स्तर की ओक के पेड़ो को काट कर बुरादा बनाया जा रहा है| जबकि स्थानीय सामग्री के उपयोग का मतलब है अधिक लोगों की भागीदारी, इस संस्कृति मे नये-नये प्रयोगों के अधिक अवसर प्राप्त होते हें| वैसे सुनने मे यह आदर्शवादी और काल्पनिक प्रतीत होता है, परंतु जैसे-जैसे हम स्वास्थय-सेवा और शिक्षा जैसी केन्द्रीकृत व स्वचालित-व्यवस्था से अपनी निर्भरता कम करते हें, हम डॉक्टर और मरीज तथा शिक्षक और विधार्थी के मध्य के अनुपात को संतुलित कर पाते हैं| और इस प्रकार हम व्यक्तिगत आवश्यकताओं और क्षमताओं के लिए स्थान बना पाते हैं|

पूर्णतः बेरोजगारी रहित संसार की कल्पना करना पूरी तरह से उतना ही तर्कसंगत है; जैसा की किसी सुपर-मार्केट के शेल्फ मे हरेक प्राइज़-टैग के साथ है| दक्षिण-पंथी और वाम-पंथी दोनों ही राजनीतिक विचारधाराएँ, बड़ा ही बेहतर है की नीति मे विश्वास रखती है, नागरिकों के लिए सही शब्दों मे कोई विकल्प नहीं बचता है|

जब हम व्यक्तिगत-स्तर की अर्थव्यवस्था को मजबूत करते हैं, तो हम निर्णय-लेने की प्रक्रिया को स्वतः ही परिवर्तित कर देतें हैं| हम केवल एसी व्यवस्थाएं नहीं तैयार हारते जिनको की हम प्रभावित कर सकते हें, वरन हम अपने-आप को ऐसे संबंधो के एक ऐसे जाल का हिस्सा बनजाते जो हमारी समझ और गतिविधियों को गहनता प्रदान करता है| हमारे प्रयासों के द्वारा, समुदाय और स्थानीय पर्यावरण तंत्र पर हुवे प्रभावों के परिणाम स्वरुप अनुभव आधारित जागरूकता प्राप्त होती है, जो हमें

बदलावों के लिए सक्षम तो बनती ही है परन्तु साथ ही हमारे आसपास की जटिलताओं के माध्यम से विनम्र भी बनाती है|

आधारभूत स्तर पर, स्थानीयकरण हमें ब्रहमांड के निरंतर विकसित होने और बदलाव की प्रकृति को सराहना सिखाता है| दुनिया को शब्दों, स्थिर विचारों, और संख्याओं के माध्यम से देखने और लेबल्स के साथ जीवन जीने के स्थान पर हम जानने लगते हैं की प्रत्येक व्यक्ति, पशु, और पेड़ अपने-आप मे अद्भुत है, और पल-पल बदलते रहते हैं| स्थानीयकरण हमे वह निकटता और गति प्रदान करता है, जो इस संपूर्णता को अनुभव करने के लिए आवश्यक है, और जरूरी हे उस आनंद की अनुभूति के लिए जो सम्बन्धों के इस जीवंत जाल का अभिन्न अंग बनकर प्राप्त होती है|

दो मूलरूप से भिन्न-भिन्न मार्गों मे से ही हमे अपने लिए मार्ग चूनना पड़ता है| एक हमे ले जाता है, बिना सोचा-समझे विशाल, तेज गति के एकरूप यांत्रिक विकास की ओर| यह वह रास्ता है, जो हमे प्राकृतिक संसार और एक दूसरे से अलग करता है और हमारे सामाजिक और पर्यावरणीय पतन को तेज कर देता हैं| दूसरा मार्ग है गहन संबंध का, आकार को छोटा करने का, गति को धीमा करने का| जरूरत है एसी सामाजिक और आर्थिक सरंचना को पुनर्स्थापित करने की जो हमारे एकमात्र ग्रह को पोषित करते हुए हमारी सच्ची मानवीय और भोतिक जरूरतों की पूर्ति के लिए आवश्यक है|

स्थानीय हे, हमारा भविष्य की मुद्रित प्रतिलिपि के लिए यहाँ पर ऑर्डर करें